शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (दरभंगा)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :- 01 मई 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं दरभंगा के शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से देवघर मुख्यालय परिसर में संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 01 मई 2010 को किया गया।

शिव शिष्य परिवार के सचिव, **श्री अभिनव आनन्द जी** ने वरेण्य गुरूभ्राता **श्री हरीन्द्रानन्द जी** को सादर आमंत्रित किया व वरेण्य गुरूभ्राता ने अपनी सौम्य उपस्थिति की कृपा की।

इस संगोष्ठी उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बतलाया कि 'शिव जन जन के गुरू हैं' इस बात को आम आदमी तक पहुँचाने के उद्देश्य से ही इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। शिव शिष्य परिवार की मान्यता है कि मनुष्य मात्र का कल्याण शिव को अपना गुरू बना कर ही सम्भव है।

दरभंगा जिले में शिव कार्य को तेज करने के लिए आये तमाम गुरूभाई/बहनों को आर्शीवचनों से आप्लावित कर वरेण्य गुरूभ्राता ने शिव कार्य की व्याप्ति को विस्तारित करने हेतु अपेक्षित प्रयास करने पर बल दिया। प्रो0 रामेश्वर मंडल, उपाध्यक्ष, शि0शि0प0 द्वारा ‘‘जगत गुरू शिव की शिष्यता के उद्भव, विकास और प्रयोजन’’ पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने संगोष्ठी में अपनी बात रखते हुए कहा कि शिव विश्व गुरू हैं। वे सभी के गुरू हैं, किन्तु व्यक्ति उन्हें अपना गुरू नहीं मानता। लोगों को जानकारी है, समझ नहीं है गुरू ने कहा है लोगों को समझाया जाय। समझ से ही शिष्य भाव पैदा होगा। विचार से भाव की प्रगाढ़ता प्रेम में परिणत होती है, आवश्यकता है शिव गुरू से प्रेम पैदा करने की। वरेण्य गुरूभ्राता द्वारा प्रदत्त तीन सूत्रों का पालन व्यक्ति का शिव शिष्य होने की सरल एवं परिणामदायी विधा है। सचिव ने उपस्थित जनसमूह को शिव की शिष्यता स्वीकार कर आजमाने का अह्वान किया। आगतों का स्वागत एवं आभार श्री विद्यानंद महतो, क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, दरभंगा ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (खगड़िया)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 02 मई 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं खगड़िया के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 02 मई 2010 को किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

शिव शिष्य संगोष्ठी में उपस्थित खगड़िया जिला से आये सैकड़ों की संख्या में अध्यात्म प्रेमीजनों एवं शिव शिष्यों/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को अब अपना गुरु बनाना होगा क्योंकि गुरु सम्यक ज्ञान प्रदान करने वाला होता है। वे जीवन जीने की कला सिखलाते हैं। उन्होंने शिव गुरु से शिष्य के रुप में जुड़ने हेतु तीन सूत्रों– ‘‘दया माँगना, गुरु चर्चा करना तथा गुरु को नमन करना’’– के विज्ञान की विशद् चर्चा की। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग एवं वर्ण के लोगों को शिव का शिष्य होने हेतु आह्वान किया।

श्री देवाशीष प्र0 सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार ने कहा कि मानव मात्र के कल्याण हेतु शिव शिष्यता ही एक मात्र विकल्प है। शिव शिष्यता शिव की दया से उपलब्ध होता है। शिव शिष्य परिवार के सचिव श्री अभिनव आनन्द ने कहा कि शिव को गुरू मान लेने मात्र से कुछ नहीं होता, गुरू आदेशित कर्म करने से ही शिव गुरू की दया मिलती है।

आगतों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन खगड़िया जिले के गुरूभाई/बहनों के द्वारा किया गया। मंच संचालन श्री रामाशंकर, देवघर ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (सुपौल)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 03 मई 2010 (सोमवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं सुपौल के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 03 मई 2010 को किया गया।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार के उपाध्यक्ष, प्रो0 रामेश्वर मंडल द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की।

इस शिव शिष्य संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि बिना शिव का शिष्य बने मानव जीवन का कल्याण सम्भव नहीं है। शिव गुरु से आया ज्ञान जीवन जीने की कला सिखलाता है। महादेव जगत गुरु हैं। अतः किसी भी धर्म, सम्प्रदाय एवं जाति के लोग शिव को गुरु मान कर इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

प्रो0 रामेश्वर मंडल ने कहा कि महादेव के रूप में शिव की पूजा घर – घर में होती आ रही है किन्तु उनके जगत गुरु स्वरूप से लोगों का जुड़ाव नहीं हुआ है। अश्रद्धा और अविश्वास के दायरे में भी शिव को गुरु मान कर उनसे ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

इस अवसर पर सहरसा के ललन राय ने कहा कि आज मानव मात्र के कल्याण हेतु शिव की शिष्यता ही एक मात्र विकल्प है। मंच संचालन रामाशंकर सिंह एवं आगतों का स्वागत श्री अवधेश ठाकुर, क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक एवं धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय गुरुभाई/बहनों द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (अररिया एवं किशनगंज)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय ।
दिनांक :– 09 मई 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं अररिया एवं किशनगंज के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 09 मई 2010 को किया गया।

इस आध्यात्मिक आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी ने प्रो0 रामेश्वर मडंल, उपाध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार द्वारा किये गये सादर आमंत्रण को कृपा पूर्वक स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य लोगों को शिव गुरु से शिष्य के रुप में जुड़ाव हेतु प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि शिव को अपना गुरु मानने के क्रम में प्राप्त अनुभूतियों के आधार पर उनके द्वारा तीन सूत्र निरुपित किये गये हैं।

उन्हीं सूत्रों के आधार पर शिव का शिष्य बना जा सकता है। महेश्वर शिव के गुरु स्वरुप के संबंध में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अन्त में सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिंग, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को महेश्वर शिव को अपना शिष्य भाव अर्पित करने की दिशा में अग्रसर होने की अपील की।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार देवघर ने अपनी बातों को रखते हुए कहा कि मानव जीवन में गुरू की आवश्यकता ही नहीं बल्कि अनिवार्यता है। गुरू मनुष्य के जीवन का आधार होता है। इसलिए मानव जीवन में गुरू की अनिवार्यता है।

आगतों का स्वागत श्री विश्वनाथ भगत, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, अररिया एवं आभार शिव शिष्य परिवार किशनगंज के द्वारा प्रकट किया गया।